SS-1

ISSN 2249 - 8893

P.PUBLICATION

Annals of Multi-Disciplinary Research

A Quarterly International Peer Revieved Refereed Research Journal

Chief Editor :
Dr. R.P.S. Yadav

Editor :
Dr. Sarvesh Kumar

UGC Approved Journal No – 48728
(IIJIF) Impact Factor - 3.034

ISSN 2249 - 8893

Annals of Multi-Disciplinary Research

A Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journal

P. PUBLICATION

Volume 8 **Issue I** **January 2018**

Editor
Dr. Sarvesh Kumar
UPRTOU Allahabad

Chief Editor
Dr. R. P.S. Yadav
Incharge Director,
School of Humanities
UPRTOU Allahabad
www. annalsmdresearch.com

E-mail : annalsmdresearch@gmail.com www. annalsmdresearch.blogspot.com

डॉ. मनीष कुमार त्रिपाठी, सहायक अध्यापक, राजकीय क्वींस इण्टर कॉलेज, वाराणसी

- **महिला सशक्तीकरण महिलाओं की दशा एवं दिशा** 660-664
  डॉ. श्वेता सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, श्री अ.क.पी.जी. कालेज, वाराणसी।
- **शिशुपालवध के नायक श्री कृष्णा** 665-666
  डॉ. दिव्या त्रिपाठी, एम.ए. पी.एच.डी., पूर्व शोध छात्रा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- **आतंकवाद का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण** 667-668
  उदयन मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी
- **महामना का जीवन दर्शन एवं मालवीय मूल्य** 669-672
  डॉ. चन्द्रशेखर सिंह, एड. प्रवक्ता (संस्कृत), तथागत बुद्ध महिला महाविद्यालय, चितभवन, इटावा, उ.आ. (कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर)
- **समाज में क्षीण होती मनुष्यता और मैंगोसिल** 673-678
  भुवाल यादव, शोध छात्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- **मीमांसा दर्शन में निषेध की अवधारणा : एक अवलोकन** 679-682
  राज गोपाल, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- **साहित्य का समाजशास्त्र और यथार्थवाद** 683-687
  डॉ. प्रमोद कुमार श्रीवास्तव 'अनंग', असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, स्वामी सहजानन्द पी.जी. कालेज, गाजीपुर (उ.प्र.)
- **महात्मा गांधी और सामाजिक परिवर्तन – अतीत से वर्तमान तक : दलितों के सन्दर्भ में** 688-690
  डॉ. अरविन्द कुमार, एम. ए., पी-एच.डी. (राजनीतिशास्त्र), बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- **यशपाल की कहानियों में जीवन मूल्य** 691-692
  डॉ. कल्याण कुमार झा, एसोसिएट प्रोफेसर, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।
- **हृदयेश की कहानियों का कस्बाई वैशिष्ट्य** 693-695
  डॉ. साक्षी शालिनी, एम.ए.,पीएच.डी. (हिन्दी) बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- **भारत और चीन संबन्ध : संघर्ष एवं सहयोग** 696-699
  वीरेन्द्र कुमार, शोध छात्र, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- **दलित चिंतन की दृष्टि और प्रेमचंद का साहित्य** 700-704
  डॉ. कंचन यादव, एसोशिएट प्रोफेसर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फाफामऊ, इलाहाबाद
- **गाँधी का नैतिक अर्थशास्त्र** 705-708
  डॉ. अर्चना त्रिपाठी, एसोसिएट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र), सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद
- **पातंजल योग-सूत्र : एक आध्यात्मिक मनोचिकित्सा** 709-713
  डॉ. ममता कुमारी, व्याख्याता, दर्शनशास्त्र विभाग, जी.एम.एच.पी. कॉलेज, बगहा (पश्चिमी चम्पारण), (बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर)

हृदयेश की कहानियों का कस्बाई वैशिष्ट्य

डॉ. साक्षी शालिनी *

हृदयेश का पूरा नाम हृदय नारायण मेहरोत्रा है, हिन्दी साहित्य जगत में वे हृदयेश के नाम से विख्यात हुए। हृदयेश को हिन्दी साहित्य जगत में अन्य हिन्दी साहित्यकारों की तरह ख्याति प्राप्त नहीं हो सकी। किन्तु साहित्य में कस्बाई चेतना का विकास इनकी अभूतपूर्व देन है। हृदयेश ऐसे कथाकार हैं जो कस्बाई क्षेत्र में ही जन्मे, पले, बढ़े और सम्पूर्ण जीवन भी बिताया। इसलिए इनकी कहानियों में कस्बाई चेतना की सादगी प्रमुखता से उभर कर आई है। कमलेश्वर के बाद हृदयेश ही ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य जगत में कस्बों की सच्चाई को ईमानदारी से दिखाया। गाँव और महानगरों के जीवन–चित्रण से हिन्दी साहित्य भरा पड़ा है। कस्बाई जीवन को हिन्दी साहित्य में उतनी महत्ता नहीं मिली। हृदयेश ने कस्बाई चेतना को प्रमुखता से उठाया और उसे प्रतिष्ठित भी किया। कमलेश्वर ने कस्बाई चेतना को अपनी कहानियों में उठाया था, उसी का प्रौढ़ रूप हृदयेश की कहानियों में मिलता है।

किसी भी व्यक्ति की मानसिकता पर उसके सामाजिक तथा आर्थिक परिवेश का व्यापक प्रभाव पड़ता है। भारत में कस्बा का अस्तित्व मुगलों के समय आया। कस्बा गाँव और नगर के बीच की ईकाई होती है। कस्बों में गाँव और शहर दोनों की मिलीजुली संस्कृति पाई जाती है। हृदयेश का जन्म 1930 में उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में हुआ था, जो कस्बाई क्षेत्र था। वे जन्म से मृत्युपर्यन्त अपने जन्म स्थान पर ही रहे। यही कारण है कि हृदयेश की कहानियों में कस्बाई चेतना स्वाभाविक रूप में वर्णित हुआ है। हृदयेश इस संबंध में लिखते हैं कि–

"लेखक का कर्म जनपद ही उसका साहित्य जनपद होता है। लेखक, जहाँ वह रहता है और जिनके बीच वह उठता, बैठता, काम करता व साँस लेता है, वे सब संवेदना के स्तर पर उसके अनुभव संसार का हिस्सा बनते हैं, उसका परिवेश और उसकी आर्थिक, सामाजिक उसकी सोच और समझ को बहुत कुछ संचालित और नियंत्रित करते हैं। अधिकतर वह अपने कथानक, चरित्र और उनको खड़ा करने वाली कच्ची–पक्की सामग्री सब वहीं से चुनता है। इनको चुनते हुए वह स्वयं को बहुत सहज और आश्वस्त महसूस करता है। मेरी रचनाओं में जो छोटे–छोटे पेशों से जुड़े और छोटी–छोटी इच्छाओं–आकांक्षाओं को ही बड़ा मानकर उनकी पूर्ति के लिए संघर्षरत लोग हैं, इसका कारण भी है कि मेरा साबिक ऐसे ही लोगों से रहा है। मेरी रचनाओं में अभाव का जो गहरा साया था निम्न–मध्यवर्गीय मानसिकता है, इसका कारण मेरा उस वर्ग का होना है और लम्बे समय तक ऐसी जिन्दगी जीना है, जो यातना का सफर होता है। मेरी रचनाओं में जो परिवेश का एक सीमित फलक या सामाजिक और नैतिक घुटन लिये कस्बा है, इसका कारण मेरा मुद्दत से एक ठहरे हुए शहर में रहना है।"[1]

कस्बाई क्षेत्रों की एक प्रमख विशेषता है कि यहाँ के अधिकांश निवासी मध्यमवर्ग से आते है। किसी भी व्यक्ति के निर्माण में उसके परिवेश का विशेष महत्व होता है। मध्यम वर्ग जो कस्बाई क्षेत्रों का प्रमुख वर्ग है वहाँ अभावों का स्थायी साम्राज्य होता है। वे अपने जीवन के छोटी–छोटी खुशियों को मजबूरन दबाने और अपनी इच्छाओं का दमन करना बखूबी जानते हैं। मध्यवर्गीय समाज अपने स्थिति को यथावत् बनाए रखना चाहते हैं, परिवर्तन से उन्हें असुरक्षा का भय लगता है। अपनी कहानी 'गर्दिश के दिन' में हृदयेश ने कस्बाई क्षेत्र के लोगों का स्वाभाविक का स्वाभाविक वर्णन इस प्रकार करते हैं–

"कोई इंसान उम्र का एक बड़ा हिस्सा, जिसमें जवानी के अनमोल कहे जाने वाले दिन भी हों, पूरा कर चूका हो और जायजा लेने बैठे तो पाए कि उसके वे सारे के सारे दिन टेढ़े–तिरछे थे, शिव के बरातियों जैसे, तो यह अपने में अचरज होते हुए भी अचरज नहीं है, इस मायने में कि इस देश में

---

* एम.ए.,पीएच.डी., हिन्दी, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

हर उस आदमी की नियति यही है, जो निम्न–मध्यम वर्ग से आया हुआ है, महत्वाकांक्षी है और आदर्श जिसके लिए आज भी मूल्य बने हुए हैं।"[2]

हृदयेश सम्पूर्ण रूप से छोटे शहरों अर्थात् करबाई क्षेत्र के निम्न और मध्यवर्गीय जीवन के कथाकार हैं। इनकी कहानियों में कस्बाई जीवन की कुंठा, निराशा, संघर्ष, जिजीविषा, संत्रास आदि स्वाभाविक रूप में उभर कर आए हैं। कस्बाई लोगों के सबल–दुर्बल दोनों पक्ष सामने आते हैं। हृदयेश ने अपनी कहानियां में इस बात को प्रमुखता से उठाया है कि कैसे ये लोग उच्च वर्ग के लोगों से प्रतिस्पर्धा भी रखते हैं, उनकी भर्त्सना भी करते हैं और उन्हीं के जैसा बनना भी चाहते हैं। इस संबंध में प्रस्तुत कथन द्रष्टव्य है– "मध्यवर्गीय समाज की पटरी उच्च वर्ग के साथ नहीं बैठ पाती। यही बात निम्न वर्ग की तो इसकी हैसियत वही है, जो उच्च वर्ग के सामने मध्य वर्ग की है। मध्यवर्गीय निम्न वर्ग के लोगो को हीन दृष्टि से देखते हैं। मध्यवर्ग दरअसल एक बुद्धिजीवी वर्ग है, मगर इसका हाल "उस गूंगे जैसा है, जो बोल तो नहीं सकता मगर सुन सब सकता है। यह वास्तव में एक बेचारा वर्ग है..... निम्न वर्ग का आदमी दान ले सकता है, मदद के लिए किसी के सामने मुँह खोल सकता है, लेकिन मध्य वर्ग न तो दान ले सकता है, न किसी के सामने फैला सकता है। इसके लोगों का हाल उस भली लड़की जैसा है जो न तो ससुराल में भोगी पीड़ा को मायके में कह सकती है और न ससुराल में ही मायके की गिरी हुई आर्थिक स्थिति की चर्चा कर सकती है।"[3]

भारत में कस्बाई क्षेत्रों का विकास 11वीं सदी में मुगलों की सत्ता स्थापित होने के बाद होता है। भारतीय सत्ता में आने के बाद मुगलों ने प्रशासन के क्षेत्र में अनेक सुधार किये। जो क्षेत्र गाँवों से बड़ा किन्तु नगरों से छोटा था उसे मुगलों ने कस्बा के रूप में परिवर्तित कर दिया। कस्बा एक प्रकार से समाज के मध्यवर्ग के लोंगों से संबद्ध था। अर्थात् कस्बाई क्षेत्रों में मध्यवर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। हृदयेश की कहानियों में कस्बाई क्षेत्रों की यह विशेषता है कि यहाँ शहरों के आधुनिकता के साथ ही ग्रामीण संस्कृति कमे भी दर्शन साथ–साथ होते हैं। हृदयेश की कहानयों का कस्बाई वैशिष्ट्य है कि यहां नई सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है। जो सभ्यता–संस्कृति भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। इस प्रकार कस्बा और मध्यवर्ग एक दूसरे के पूरक हैं। भारत के विकास में मध्यवर्ग की चर्चा करते हुए के.सी. व्यास लिखते हैं–

"मध्य वर्ग सामंती व्यवस्था में नहीं पाया जाता क्योंकि उस जमींदार और किसान का सीधा संबंध था, किन्तु पूंजीवादी व्यवस्था ने समाज को इतना जटिल बना दिया है कि उसमें मध्यवर्ग की भी आवश्यकता हुई जो जटिल व्यवस्था के संघटन सूत्र को सम्भाल सके। इस वर्ग में नौकरी पेशा, शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग को विशेषतः बुद्धिप्रधान वर्ग माना गया है और सामाजिक क्रांति के प्राण समस्त विचारों का सर्जन मध्य वर्ग में होता है।"[4]

कस्बाई क्षेत्रों की विशेषता होती है लोगों में दिखावे की प्रवृर्ति की प्रमुखता। हृदयेश ने कस्बाई क्षेत्र के इस वैशिष्ट्य को अपनी कहानियों में प्रमुखता से चित्रित किया है। अपनी कहानी 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' में हृदयेश ने कस्बाई लोगों के इसी मानसिकता का चित्रण किया है कि कैसे एक कस्बाई आदमी अपनी श्रेष्ठता दिखाना चाहता है। उसकी यह इच्छा इतनी प्रबल है कि इसने एक मनोरोग का रूप ले लिया है। श्रेष्ठता ग्रन्थि से पीड़ित हरिश्चयन्द्र स्वयं को बढ़ा–चढ़ा कर दिखलाने की कोशिश करता है। इस कहानी में हृदयेश की कस्बाई वैशिष्ट्ता अपने सम्पूर्ण रूप में उभर कर सामने आया है। प्रस्तुत है इस कहानी का कस्बाई वैशिष्ट्य–

"हरिश्चन्द्र जिला न्यायालय में मामूली चौकीदार है। वह औसत कद–काठी और सेहत का व्यक्ति है। निर्वाचन में ड्यूटी के एवज में उसे सात रूपये पचहत्तर पैसे भत्ता में प्राप्त हुए। यह उसकी तनख्वाह के अतिरिक्त एक तरह से उपरी कमाई थी। सो जम कर दारू पी ली। हरिश्चन्द्र जब नशे में होता है, अक्सर सही–सही बोलता है। बोलता क्या बकबक करने लगता है। उस दिन जब उसने नशा किया था तो दफ्तर का समय समाप्त हो, चुका था। पर बाबू लोग अभी मौजूद थे। नाजिर ने हरिश्चनद्र को बुलवा भेजा। एक चपरासी ने आकर इसकी सूचना दी। उसने हरिश्चन्द्र की हालत देखकर चुटकी ली– "चौकीदार साब नाजिर साहब ने सलाम कहा है।"[5]

हृदयेश की कहानियों में कस्बाई रीति–रिवाज, रहन–सहन और मनोभाव प्रमुखता से उभर कर सामने आते हैं। हृदयेश की कहानियों का यह वैशिष्ट्य है कि उनको पढ़ने के उपरान्त पाठक कस्बाई जीवन से पूरी तरह परिचित हो जाता है। इन कहानियों में एक तरफ शहरों के सम्पर्क में आने और शिक्षित होने के कारण प्रगतिशीलता को चित्रित किया गया है वहीं दूसरी ओर गाँवों की संस्कृति के असर से दकियानूसी का भी चित्रण है। कस्बाई जगहों पर महानगर तथा गाँव की मिश्रित संस्कृति ही उसकी विशेषता सजीव रूप में उभर कर सामने आता है। एक तरफ जहाँ दिखावा, ढ़ोंग तथा झूठ की सानों–सौकत होती है वहीं दूसरी ओर परिवार में प्रेम, समर्पण तथा त्याग की भावना भी प्रबल रूप में हृदयेश ने कस्बाई परिवार के इसी प्रेम और समर्पण को दिखाया है जिसे पढ़ कर पाठक का हृदय हुए बिना नहीं रह पाता है। इस कहानी का प्रस्तुत अंश द्रष्टव्य है–

"इंदर को बहुत दुख हुआ। बात बदलने के लिए पत्नी से उसने पूछा–महरी को भेजा था आयी होगी ?

इस पर पत्नी ने सफाई दी– हा आयी तो थी, पर मैंने बर्तन मंजवाये नहीं। एक तो वह महीने में दस–ग्यारह नागे करेगी दूसरे बर्तन साफ करने के लिए कुएँ से पानी खींचने से भी आना–कानी करेगी तो लगाने से क्या कायदा ? हॉ कहो कपड़ा लाये ?"[6]

इससे स्पष्ट होता है कि कस्बाई लोग किस प्रकार अपनी गृहस्थी एक–दसरे के सहयोग से चलाते हैं। अपनों को दुखन पहुँचे इसलिए एक–दूसरे से ही गृहस्थी की कमजोरियाँ छिपाते हैं।

यद्यपि आज भी कस्बाई चेतना या स्वरूप को लेकर कोई स्वतंत्र पुस्तक उपलब्ध नहीं होता है। किन्तु हृदयेश की कहानियाँ जो कस्बाई जीवन के वैशिष्ट्य को लेकर लिखी गई है, उनका महत्व अभूतपूर्व है। कथाकार हृदयेश के बारे में राजकिशोर की यह टिप्पणी सर्वथा सार्थक हैं– "हृदयेश इतने अच्छे कहानीकार हैं कि तीन चार कहानियाँ छोड़कर भी उनकी कहानियाँ पढ़नी भी पड़े तो संकोच नहीं करना चाहिए? वे न तो भावुकता में लिखते हैं, न ही पाठकों को चमत्कृत करना उसका लक्ष्य होता है। वे अपनी हर कहानी में एक ठोस मुद्दा उठाते हैं और बड़ी निपुणता से उसका निर्वाह करते हैं।"[7]

इस प्रकार हम देखते हैं कि हृदयेश की कहानियाँ कस्बाई वैशिष्ट्य को प्रमुखता से उजागर करती हैं। हिन्दी में कस्बाई दृष्टि से स्वतंत्र लेखन नहीं होने के बाद भी हृदयेश ने कस्बाई क्षेत्र को अपनी कहानियों में स्थान देकर एक नयी धारा का प्रवाह हिन्दी साहित्य में करते हैं। 'कस्बे का आदमी' कहानी लिखकर कमलेश्वर ने हिन्दी साहित्य में जो बीज वपन किया था, उसी का प्रफूल्लित रूप हृदयेश की कहानियों में दृष्टिगत होता है। अतः कस्बाई जीवन को समझने के लिए हृदयेश की कहानियाँ हिन्दी साहित्य के लिए अमूल्य हैं।

सन्दर्भ :

1. मैं! मेरी कहानी, हृदयेश, जोखिम, किताबघर, नई दिल्ली, पृ. 12.
2. गर्दिश के दिन, जोखिम, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 17.
3. डॉ. बेचन : आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास, पृ. 22.
4. दी सोशल रेनासॉ इन इंडिया, के. सी. व्यास, पृ. 46.
5. अंधेरी गली का रास्ता, हृदयेश, पृ. 127.
6. गृहस्थी, सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–1, हृदयेश, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 163.
7. सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–1, भावना प्रकाशन, दिल्ली, कवर फ्लैप, अंतिम से.

***